1151। आत्मा की आवाज अप्रत्यक्ष रूप से परमात्मा का ही निर्देश होता है ज्ञानी उसका लाभ उठाता है अज्ञानी उससे वंचित रहता है सब प्रकार के कष्ट उठाता है।

1152। हृदय में एक बार भी क्रोध का समावेश हो जाता है तो अनगिनत तप दान व यज्ञ इत्यादि के फलों को भस्मसात कर देता है शान्तिहीन बना देता है ।

1153। इच्छाशक्ति के विरुद्ध किया गया काम कभी भी सफल नहीं होता उसमें मन का योग व मन की स्थिरता नहीं होती।

1154। अहंकार व क्रोध इतने घृणित होते हैं कि देवताओं को भी शैतान की श्रेणी में ला खडा करते हैं जबकि दया व विनम्रता शैतान को भी देवता की श्रेणी में ला खडा करते हैं ।

1155। दैवी प्रवृत्ति को प्राप्त "मन" स्थिर व शान्त तूफान रहित समुद्र की भांति होता है ।

1156। एक व्यक्ति जो दृढ निश्चय संयम तथा लक्ष को प्राप्त करने में अटल होता है समें इतनी शक्ति व साहस का निर्माण होता है कि वह विश्व पर भी अपना संपूर्ण नियंत्रण रख सकता है ।

1157। अशांत व अपवित्र हृदय संसार की ही देन होती है इसलिये संसार में ही रमा रहता है भटकता रहता है ।

1158। निर्देशक की भांति महापुरुष पात्रों की भांति इन्द्रियों को अपने वश में रखता है उसी के निर्देशानुसार वे कार्य करती हैं और उसके नियंत्रण में रहती हैं ।

1159। अपराधी जुआरी शराबी कभी किसी का हितैषी व सच्चा मित्र नहीं हो सकता ।

1160। जल और वायु का कोई आकार नहीं होता जिस पात्र में हों वही आकार धारण कर लेते हैं अवसरवादी व्यक्ति भी स्वार्थ व भलाई के लिये समयानुसार अपने को बदल लेते हैं उनका कोई सिद्धांत नहीं होता।

1161। प्रभु की दृष्टि में कपटी व दुराचारी का कोई महत्व नहीं होता चाहे वह कितना भी विद्वान् धनवान पराक्रमी हो उनकी दृष्टि में तो सदाचारी चरित्रवान् व परोपकारी ही परम प्रिय है ।

1162। लोहा पारस के सम्पर्क में आकर सोना हो जाता है दुष्ट भी महात्मा के सम्पर्क में धर्मात्मा हो जाता है ।

1163। वेदों की तीव्र दृष्टि होती है मानव को संसार व परमात्मा का तथा जीवन व मृत्यु का ज्ञान कराते हैं हृदय में ज्ञान की ज्योति जलाकर मायावी संसार से मुक्ति दिलाते हैं ।

1164। ज्ञानी भूत भविष्य की चिन्ता नहीं करता केवल वर्तमान की करता है वही भविष्य की आधारशिला होती है।

1165। मनुष्य की दिव्यता महानता उसकी कर्मठता ,उच्च चरित्र व समर्पण की भावनाओं में विद्यमान रहती है ।

1166। शुद्ध व निश्छल बुद्धि प्रभु की देन होती है उसके हृदय में लक्ष्मी व सरस्वती का वास होता है उसके सदुपयोग से वह जन्म जन्मान्तर तक सुखी रहता है ।

1167। परमात्मा व आत्मा की अवस्थायें नहीं होतीं सदैव स्थिर बने रहने वाले हैं मनुष्य प्राणी व वस्तुओं की अवस्थायें बदलती रहती हैं नश्वर हैं ।

1168। दूसरों के मन की पीर जानने वाला ही दयावान् व संवेदनशील हो सकता है समाज व देश की सेवा कर सकता है।

1169। स्वार्थ रहित कर्म की पूजा ही सच्चा संसारिक सुख दे सकती है ईश्वर प्राप्त करा सकती है ।

1170। जीवन में द्वन्द्वों पर विजय पाने वाले का जीवन ही सार्थक है ।

1171। सच्चा देशभक्त निस्वार्थ भाव से अपना सर्वस्व देश को अर्पण कर अपना गौरव समझता है पतंगे की भांति अपना सर्वस्व दीपक की लौ पर न्यौछावर कर देता है ।

1172। भ्रष्ट आचरणों से व कपटपूर्ण बुद्धि से विश्व का कल्याण नहीं हो सकता आध्यात्मिक सद्बुद्धि नितांत आवश्यक है

1173। धर्म का सहारा लेकर वैमनस्य व आतंकवाद फैलाकर विश्व में कभी शांति स्थापित नहीं हो सकती ।

1174। लेखनी के सम्पर्क में आकर थोडी सी भी स्याही सहस्त्रों व्यक्तियों में ज्ञान के प्रकाश की ज्योति प्रज्वलित कर उनके जीवन को सफल व समृद्धिशाली बना सकती है ।

1175। जैसे सब नदियों का पानी विशाल समुद्र के हृदय में समा जाता है ऐसे ही सम्पूर्ण भोग व नाना प्रकार के विकार भी एक ब्रह्मज्ञानी के विशाल हृदय को चलायमान नहीं करते ।

1176। भौतिक साधनों व संपत्ति से सच्ची उन्नति व विकास संभव नहीं उसके लिये तो स्वतंत्र विचारधारा व आध्यात्मिक सद्बुद्धि की आवश्यकता है।

1177। अच्छे कर्मों को प्रोत्साहन देना बुरे कर्मों को निरूत्साह करना मानवता का कर्त्तव्य है ।

1178। संवेदनशील व्यक्ति करुणामय होता है उसमें क्रूरता व कठोरता कम होती है ।

1179। ईश्वर से संसारिक व भौतिक सुख मत मांगो , क्षणिक हैं , मांगना ही है तो उनकी शुद्ध भक्ति व कृपा मांगो जो हमेशा साथ रहेगी , मुक्ति दिलायेगी ।

1180। हार्दिक शुद्ध भक्ति प्रभु को पाने का आधार है ।

1181। मायारूपी मकडी के जाल में जो फंसा वह नष्ट हो जाता है उसे मुक्ति कहाँ ?

1182। शरीर के लिये स्नान व्यायाम आवश्यक तो मन के लिये भजन कीर्त्तन सत्संग उसकी पवित्रता के लिये आवश्यक है

1183। अच्छे कार्य करने वाले का हृदय तोडना व आघात पहुँचाना पाप है बुरे काम करने वाले का हृदय तोडना पुन्य है।

1184। भगवान नाम रूपी हार्दिक शुद्ध भक्ति एक अमोघ अस्त्र है ।

1185। सच्चा देशभक्त निस्वार्थ भाव से देश व समाज की उन्नति में सहायक होता है ।

1186। आज की राजनीति भ्रष्टाचार पापों व कुकर्मों का एक ऐसा स्थान है उसमें चरित्रवान भी कलंकित होकर ही निकलता है , 'काजल की कोठरी में कैसो ही सयानू जाये एक लीक लागि है पै लागि है'।

1187। भावनायें यदि आध्यात्मिक हैं अच्छे कर्मों का सहारा लेकर व्यक्ति का जीवन सुधर जाता है ।

1188। सांसारिक वस्तुओं व भौतिक साधनों का मोह छोडो ये सब क्षणिक हैं मृत्यु के बाद यहीं रह जाने वाले हैं ईश्वर से प्रेम करो आपका कल्याण हो जायेगा ।

1189। ज्ञान व विज्ञान जो आध्यात्मिक प्रवृत्ति से युक्त होता है वह विवेक जागृत कर आत्मज्ञान कराकर निर्वाण की ओर ले जाता है ।

1190। ईश्वर प्रदत्त पंचभूत कितने दानी हैं जल अग्नि वायु पृथ्वी व आकाश सभी मनुष्य प्राणियों व पेड पौधों की रचना के साथ साथ उनके जीवन को हरा भरा रखते हैं जीवन दान देते हैं बदले में कुछ भी नहीं लेते हैं ।

1191। अंत: करण की पवित्रता सद्विचार निस्वार्थ सबकी सेवा तथा सत्संग पर निर्भर करती है । अहंकार व कपटता तो मन को मलिन ही बनाते हैं ।

1192। मृत्यु के समय व्यक्ति दुखी होकर , अपने जीवन के सब पापों को याद कर पश्चाताप की आग में झुलसता है ईश्वर से हृदय से प्रार्थना कर क्षमा माँगता है यदि वह पहले से ही ऐसा कर ले तो पापों से मुक्त हो कर ईश्वर को पा सकता है इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

1193। सूर्य सम्पूर्ण पृथ्वी को हरा भरा रख जीवन दान देता है उसी प्रकार आत्मा भी मनुष्य के सम्पूर्ण शरीर को संचालित कर जीवन दान देती है ।

1194। मन की प्रेरणा दुखदायी व संसार में बांधने वाली होती है परन्तु अंत:करण की प्रेरणा सुखदायी व मुक्ति दिलाने वाली होती है ।

1195। चलचित्रों की कला आज कला नहीं है पैसा कमाना अंगप्रदर्शन करना मात्र रह गया है जिससे देश की नई पीढी चरित्रहीन व पथभ्रष्ट हो रही है दुराचारों को बढावा मिल रहा है । कला के नाम पर निर्माता व कलाकार पैसा बनाते हैं देश की जनता को पथभ्रष्ट करते हैं चरित्रहीन बनाते हैं , भारत जैसे सांस्कृतिक व धार्मिक देश के लिये लज्जाजनक बात है।

1196। ब्रह्मज्ञानी होना एक बात है कर्त्तव्यपरायणता दूसरी बात है पर जब तक दोनों का योग न होगा जीवन सार्थक नहीं होगा प्रभु प्राप्ति भी नहीं हो पायेगी ।

1197। हमारा मस्तिष्क हृदय लिवर व किडनी सब सुचारू रूप से अपने आप काम करते रहते हैं जबकि इन सबका कार्य हमारे ज्ञान से परे होता है प्रभु के प्रताप से सब चलता रहता है फिर भी हम अज्ञानवश अपने शरीर पर गर्व करते हैं और स्वंय को कर्त्ता समझते हैं ।

1198। स्वस्थ शरीर का असली रूप कंकाल होता है और आत्मायुक्त शरीर का असली रूप स्थूल व मृत शरीर होता है ।

1199। आत्मा व परमात्मा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।

1200। सत्य व अहिंसा दोनों दैविक व नैसर्गिक वस्तु हैं इनसे हृदय पवित्र कर व्यक्ति सब पापों से मुक्ति पा जाता है ।

1201। जन संख्या जिस गुणात्मक अनुपात में बढती है पाप और पुण्य भी उसी अनुपात में बढते हैं यह मानव की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह कौन सा रास्ता चुनता है फूलों का या कांटों का ।

1202। सत्संग से धार्मिक आस्था निर्माण होती है उससे विवेक उत्पन्न होता है विवेक से निर्मल बुद्धि और निर्मल बुद्धि से आत्म ज्ञान प्राप्त होता है तब ईश्वर की प्राप्ति होती है ।

1203। जीना उसी का सार्थक है जिसका हृदय शुद्ध , इन्द्रियां वश में और ईशवर की कृपा का पात्र हो , मायामय संसारी पुरुष तो मृत समान है ।

1204। सत्संग व भाषण में अन्तर है जो धार्मिक आस्था निर्माण करे आध्यात्मिक व सद्विचारों को उत्पन्न करे मुक्ति का मार्ग बताये उसको सत्संग कहते हैं , भौतिक साधनों का व सांसारिक ज्ञान कराने वाला भाषण है।

1205। निस्वार्थ भाव से की गई , तन मन व धन से की गई सेवा ही सच्ची भक्ति है।

1206। नव वर्ष मंगलमय हो सुखी व वैभवशाली हो ऐसी प्रार्थना प्रभु से करो व आशीर्वाद मांगो कि उनमें आस्था प्रीति व भक्ति दिन दूनी व रात चौगुनी हो जाये व तुम्हारा कल्याण हो जाये ।

1207। नववर्ष के शुभ अवसर पर क्लब नृत्य व अश्लीलता को छोडकर व मदिरापान आदि को छोडकर परोपकार व निर्धन सेवा का व भजन आदि सत्संग का आयोजन कर परम आनन्द को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये ।

1208। अनाथों के अंत:करण में झांककर देखो वे अपने जीवन के दुख दर्दों से कितने सताये हुये हैं सबकी सहायता व दया के पात्र होते हैं जो भी उनकी सहायता करेगा भगवान की कृपा का पात्र बनेगा ।

1209। वर्फ व भाप में जैसे जल तत्व विद्यमान रहता है उसी तरह आत्मा में ईश्वरत्व विद्यमान रहता है ।

1210। सब महात्माओं में वह महात्मा दुर्लभ व श्रेष्ठ होता है जो विश्व की सब वस्तुओं में व प्राणियों में ईश्वर को हर तरह से विद्यमान देखता है वही सच्चा तत्व ज्ञानी भी है ।

1211। अंत:करण निर्मल पवित्र व निश्छल होने के लिये व्यक्ति का हृदय सत्य अहिंसा निष्काम कर्म तथा निस्वार्थ सेवा जैसे सद्‌गुणों से भूषित होना आवश्यक है ।

1212। कोध के परिणामों को जानने वाला व्यक्ति कभी भी कोधित नहीं होता , दया का महत्व जानने वाला कभी दया से मुंह नहीं मोडता।

1213। कर्त्तव्यपरायणता अनुशासन दृढता तथा त्याग की सूचक है , लक्ष्य प्राप्त कराने वाली है । अकर्मण्यता अनुशासनहीनता आलस व दरिद्रता की सूचक है , जीवन को बोझिल बना देती है ।

1214। मानव जीवन की गतिविधियों का बारीकी से अध्ययन करने वाला व उनका उपयोग समाज सुधार के लिये करने वाला सच्चा मनीषी है ।

1215। लुभानेवाली सुन्दर सांसारिक वस्तुयें जब तक हृदय से पूर्णत: नहीं निकलेंगी तब तक ईश्वर नहीं मिल सकता है।

1216। भविष्यवाणी करने वाला या तो ईशवर कृपा प्राप्त है या भविष्यज्ञाता है।

1217। काले रंग पर कोई रंग नहीं चढता सफेद रंग पर कोई भी रंग चढ जाता है उसी तरह अहंकारी दुराचारी पर सत्संग व सद्विचारों का कोई प्रभाव नहीं पडता परन्तु दयावान सदाचारी पर उसका प्रभाव तुरन्त होता है ।

1218। एक सद्‌गुण दूसरे सद्‌गुणों को भी आमंत्रित करता है ।

1219। हृदय जब तक विकारों का घर है जप तप दान यज्ञ आदि शुभ कर्म सब बेकार हैं।

1220। आज जो आनन्द संतोष व समृद्धि हम अत्यधिक विलासितापूर्ण भौतिक परिधानों से पा रहे हैं सब क्षणिक है ईश्वर प्राप्ति के लिये किया गया कुछ भी चिर परमानन्द को देने वाला होगा इसमें कोई भी संदेह नहीं है।

1221। एक मांसाहारी अपनी क्षुधा पूर्ति के लिये दूसरे जानवरों का मांस खाता है तो दोषी नहीं है अज्ञानी है परन्तु मानव को तो ज्ञान है उतने पर भी वह खाता है तो घोर पापी ही है ।

1222। अच्छी भावनायें अच्छे कामों की जननी हैं उन्हीं को प्रधानता देनी चाहिये ।

1223। अहंकार व कोध में अपनी वाणी पर संयम रखने वाला व शांत रहने वाला सच्चा संयमी व बुद्धिमान् होता है ।

1224। आतंकवाद व झूठ का सहारा लेने वाला समाज व राष्ट्र जब सभ्य व विकासशील समाज की शांति व समाज सुधार की सलाह को ठुकराता है अंत में अपना अस्तित्व खो कर नष्ट हो जाता है ।

1225। अपने यौवन में बुलंदियों को छूने वाला , सूर्य की भांति चमकने वाला , सभी का प्रेरणा स्त्रोत , सर्व प्रिय मानव अपने बुढापे में जीवन की अंधेरी रातों में गुमनाम व अनजान होकर अकेले अपने जीवन से जूझ रहा होता है यह सब समय समय का खेल ही तो है ।

1226। बच्चे के प्रति मां की सच्ची ममता सृष्टि का एक नियम है ।

1227। किसी भी कला जिसमें आध्यात्मिक भावनायें प्रेम दया व करुणा होती है उसके माध्यम से प्रभु को पा सकते हैं।

1228। संसार में लिप्त न होने वाला , ईश्वर को न भूलने वाला , स्वंय को पापी व संसार को मायामय समझता है।

1229। प्रभु की माया निराली है हिंसक जानवर अपने बच्चे को तो स्थानान्तरण में एक खरोंच भी न लगने देगा पर दूसरे जानवर को जिसका शिकार किया है उसे खाकर ही छोडता है ।

1230। वास्तविक रूप में सत्य सत्य ही होता है असत्य असत्य ही होता है परन्तु असत्य शक्तिहीन होने के कारण अपने अस्तित्व को बचाने के लिये सत्य का सहारा लेता है।

1231। आत्ममंथन द्वारा जिन्होंने अपनी इन्द्रियों व मन को वश में कर लिया है कर्म बंधन से मुक्त हैं दुख सुख उन्हें छुते ही नहीं , आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया है ।

1232। चरित्रहीनता अश्लीलता तथा कामवासना जब चरम सीमा को लांघ जाती है मानव जानवर से भी नीचे गिर जाता है उसका पतन हो जाता है पवित्र रिश्तों को भी नहीं छोडता ।

1233। जीवन जीने की कला है जीवन कैसे जिया जाये न कि कितने दिन जिया जाये ।

1234। भयानक बिमारियां धनवान विद्वान उच्चपद प्राप्त किसी को भी नहीं छोडतीं , मृत्यु निश्चित होती है , पापी दुराचारी अपने अपराधों के लिये दंडित अवश्य होगा ही ।

1235। ईश्वर प्रदत्त मानव जीवन एक वरदान है सदुपयोग करना चाहिये , मुक्ति मिलेगी ।

1236। संसार में सब वस्तुयें दर्पण में प्रतिबिम्ब मात्र होती हैं अज्ञानता में हम उनके पीछे भागते रहते हैं अंत में सब यहीं छूट जाता है कुछ भी साथ नहीं ले जा सकते ।

1237। बुद्धिमत्ता साहस पराक्रम पुरुषार्थ तथा कार्य करने की क्षमता इन सब का प्रवाह यदि अच्छे कामों की ओर होता है तो व्यक्ति अपना भी व देश का भी उद्धार करता है ।

1238। सब की श्रद्धा उनके अंत:करण के अनुरूप होती है वैसा ही उनका स्वरूप होता है ।

1239। निस्वार्थ त्याग व बलिदान का उदाहरण हमें मिट्टी से लेना चाहिये जो सब पेड पौधों को हरा भरा रख जीवन दान देती है सबके पैरों तले रहती है बदले में किसी से कुछ भी नहीं लेती ।

1240। घर के बडे बूढे यदि धर्मात्मा व पुण्यात्मा हैं तो उनकी आगे वाली पीढी भी रीति रिवाजों को अपनाती है सुन्दर सुखद वातावरण का निर्माण होता है कुटुम्ब के सब लोग सुखी रहते हैं ।

1241। मेघ मीलों लम्बी यात्रा कर सब पेड पौधों को राहत पहुंचा कर हरा भरा रख कर व मनुष्यों व सभी प्राणियों को जीवन दान देते हैं पर बदले में कुछ भी नहीं लेते हैं ।

1242। निस्वार्थ भाव से किया गया कोई भी कार्य व्यर्थ नहीं जाता ईश्वर फल अवश्य देते हैं ।

1243। अपनी आंखें बंद करने से जैसे उजाला अंधेरे में नहीं बदल जाता वैसे ही हमारे चाहने से दुर्गुण सद्‌गुण में नहीं बदल सकते ।

1244। यह दुनियां भी एक मेला ही है जो ऐसा समझता है वह तर जाता है जो इसमें रम जाता है दुख पाता है ।

1245। गुणों व दुर्गुणों का निर्माण हृदय में होता है पर उपयोग सार्वजनिक क्षेत्र में होता है ।

1246। किसी भी परिवार में मनमाना आचरण करने वाले बुरी आदतों के शिकार हो जाते हैं घर की व्यवस्था भंग हो जाती है परिवार नष्ट हो जाते हैं ।

1247। शुद्ध अंत:करण द्वारा शुद्ध वाणी सत्कर्म व पवित्र भावनाओं से परम आनन्द प्राप्त होता है वह परब्रह्म परमामा का प्रिय व उसके निकट होता है ।

1248। त्याग व सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण पेड के तने से मिलता है मिट्टी से जल व भोजन लेकर ऊपर की सब शाखाओं पत्तियों फल व फूलों को लगातार पहुंचा रहता है हरा भरा रख जीवन दान देता है किसी से कुछ नहीं लेता है ।

1249। आसक्ति का त्याग , सुख में सुखी , दुख में दुखी न होना सबसे छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय है ।

1250। जैसे वायु गंध को ग्रहण कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती है उसी प्रकार आत्मा भी एक शरीर को छोडकर दूसरे शरीर को ग्रहण कर लेती है ।

1251। प्रेम सभी करते हैं दयायुक्त प्रेम भगवान को प्राप्त करने में सहायक है मायायुक्त संसार में बांधता है।

1252। समाज में सज्जन पुरुष का व अहिंसक जानवर का आदर होता है दुर्जन बुरे मानव का व हिंसक पशु का सभी अनादर व बहिष्कार करते हैं ।

1253। अहंकार क्रोध रहित पवित्र मन सुख समृद्धि का द्योतक है अपवित्र मन दुखों आपत्तियों का द्योतक है ।

1254। संवेदनशील धार्मिक भावनाओं को कर्म का रूप देकर अपना हृदय पवित्र कर ईश्वर को प्राप्त कर लेता है।

1255। जन भावनाओं का आदर करना अप्रत्यक्ष रूप से जनार्दन की सेवा है सच्ची भक्ति ही है ।

1256। भाप बादल पानी व बर्फ सब जल के ही रूप हैं समस्त प्राणियों में वस्तुओं में भी परम ब्रह्म परमात्मा का ही अंश व्याप्त रहता है उसके बिना किसी का भी अस्तित्व नहीं है।

1257। ज्ञान व विवेकयुक्त निस्वार्थ कर्म "उपासना" ही होती है ।

1258। "सदाचार" ज्ञान के बिना , और "भक्ति" श्रद्धा के बिना अधूरी है।

1259। सद्विचारों का प्रार्दुभाव न हो तो बुरे विचार हावी हो जाते हैं उन्हें संजोये रखना चाहिये ।

1260। विश्व एक बहुत बडा बागीचा है ईश्वर उसका माली है अपराध व दुष्कर्मों रूपी कांटों को निकाल बाहर फेंकता है और पुन्य तथा सत्कर्मों रूपी फूलों फलों को संजो कर रखता है जो सब को सुख देते हैं ।

1261। वे मनुष्य जिनसे सरलता भोलापन स्वाभाविकता तथा नैसर्गिक प्यार मिलता है उनमें ईश्वर का आभास मिलता है हृदय को प्रफुल्लित करते हैं ईश्वरीय अनुभूति व परमानन्द प्राप्त कराते हैं अपार सुख देने वाले होते हैं ।

1262। सूप में अनाज फटकने पर हल्का धान बाहर निकल जाता है भारी उसी में रह जाता है इसी प्रकार सत्संग प्रेमी असीम निष्ठा वाले ईश्वर के निकट ही रहते हैं और कम प्रेम वाले बाहर चले जाते हैं ।

1263। भक्तिपथ का आधार सरलता ही है , सरल ही प्रभु को पा सकता है ।

1264। स्वेच्छा से किया गया त्याग व बलिदान ईश्वर की परम भक्ति ही है।

1265। ये शरीर नश्वर है मन बुद्धि हाथ व पैर सब शरीर के अंग शरीर के साथ ही नष्ट हो जाते हैं आत्मा शाश्वत व अमर है तुरन्त उसकी आगे की यात्रा शुरु हो जाती है ।

1266। जिसने अपना सर्वस्व ईश्वर को अर्पण कर दिया है उसका परम कल्याण निश्चित ही है।

1267। जब तन मन से व्यक्ति ईश्वर की आराधना में लग जाता है उसमें चेतनता जाग्रत हो जाती है उसे सब में प्रभु के दर्शन होते हैं जब चेतनता और पवित्र होती है तो पूर्ण रूप से उसे ईश्वर से संबंध का आश्वासन मिल जाता है ।

1268। सम्पूर्ण बह्मांड व प्रकृति ज्ञान का एक ऐसा विशाल व अपूर्व भंडार है जिसका मानव हजारों वर्षो से प्रयत्न करते हुये भी उस ज्ञान का पल्लू भी छू नहीं पाया है ।

1269। विश्व में जो भी घटता है ईश्वर के इशारे से , वही कर्त्ता कारण सब कुछ वही है उसके अलावा कुछ भी नहीं है।

1270। व्यक्ति की सब इन्द्रियां अति बलशाली होती हैं इनको अभ्यास भक्ति व वैराग्य से ही बस में किया जा सकता है, इन पर नियंत्रण पाने से ही ईश्वर को पाने का मार्ग प्रशस्त होता है।

1271। पूंजीवादी पाश्चात्य सभ्यता वाले अश्लील व विलासितापूर्ण जीवन से अब पूरी तरह ऊब चुके हैं उनकी अन्तरात्मा सब कुछ भूलकर हार्दिक शांति पाना चाहती है उन्हें मन की शांति मिले ,किसी भी देश व धर्म के ज्ञान से , इसलिये वे भारत जैसे शांतिप्रिय व धार्मिक देश में आकर उसका लाभ उठाते हैं और सफल होकर अपने को धन्य मानते हैं।

1272। अपने लक्ष्य को सामने रखकर परिश्रम करने वाला व सर्वदा प्रयत्नशील रहने वाला सफलता को पा ही लेगा । जो भाग्य का सहारा लेता है वह तो आलसी ही है उसे सफलता मिलनी असंभव ही है।

1273। सब कर्मों में भावनाओं की ही प्रधानता रहती है कर्म तो साधन मात्र होते हैं यदि हमारी भावनायें निस्वार्थ पवित्र व धार्मिक हैं तभी हमें मुक्ति मिल सकती है ।

1274। आत्म रक्षा के लिये शस्त्र उठाना हिंसा व पाप नहीं है अधर्म को समाप्त करना मात्र है ।

1275। सांसारिक सब कार्यों में आसक्ति का न होना ही सब पापों से निवृत्ति का एकमात्र उपाय है ।

1276। धर्म को अपने निजी जीवन में उतारना ही मानवता है , सत्य संयम व निस्वार्थ सेवा ही प्रभु प्राप्ति का मार्ग है।

1277। सबके हृदय में आपस में एक दूसरे के प्रति यदि आदर का भाव हो तो सद्विचारों का ही आगमन होगा।

1278। चित्त की चंचलता हृदय को दूषित करती है दुर्गुण और बुरे विचारों का जन्म होता है चित्त को स्थिर व दृढ रखने के लिये जप योग श्रेष्ठ है।

1279। परमब्रह्म परमात्मा की कृपा से यह दुर्लभ शरीर मिलता है मुक्ति का मार्ग तय करने को पर अज्ञानी अपने दायित्व को भूलकर संसारी माया की चकाचौंध में ईश्वर को भूल जाता है और चौरासी योनियों में भटकता रहता है ।

1280। धर्म तथा अध्यात्मवाद किसी की निजी संपत्ति नहीं है यह तो अनादि काल से शास्त्रों महात्माओं व मुनियों द्वारा अपनाया सनातन व शास्वत ज्ञान है जो मानव व समाज के कल्याण का व मुक्ति का मार्ग हमेशा से प्रदर्शित करता आया है और करता रहेगा ।

1281। शरीर का संसार से संबंध जन्मजात ही है मरने पर अपने आप ही छूट जाता है पर जीवात्मा व परमात्मा का संबंध शास्वत व सनातन है व सर्वदा रहेगा।

1282। बाह्य सौन्दर्य भौतिकवादी है अल्पकालीन दुखदायी व संसारी है जबकि आंतरिक सौन्दर्य अध्यात्मवादी है चिरजीवी सुखदायी शांतिकारक व मुक्तिदायी है ।

1283। आर्थिक कृषिक व आधुनिक वैज्ञानिक विकास से देश में समृद्धि आती है कलाओं से देश का श्रृंगार होता है प्रतिभाशाली देश भक्तों से देश का गौरव बढता है ऐसा देश विश्व पर राज्य करता है ।

1284। जिसका विवेक व ज्ञान जाग्रत हो जाता है वह सद्गुणों व पुण्य कर्मों को ही ग्रहण करता है ।

1285। शिक्षित होना उत्तम व श्रेष्ठ है परन्तु दीक्षित होना उससे भी उत्तम है ।

1286। हृदय की विशालता व दूरदर्शिता सम्पूर्ण विश्व को कुटुम्ब समझने में है स्वार्थी संकीर्ण हृदय वाले केवल अपने निजी परिवार को ही अपना समझते हैं।

1287। हृदय में जब क्रोध व प्रतिशोध की ज्वाला धधकती है तो व्यक्ति अपना आपा खो बैठता है उसे केवल अशांति घृणा व पाप ही मिलते हैं ।

1288। प्रभु ही सब करता है यही सच है यही सच्चा ज्ञान है मानव स्वंय कर ही क्या सकता है ।

1289। सद्‌गुणों से हृदय में दुर्गुण नहीं आते व ईश्वर के प्रति प्रीति बढती है ।

1290। कुम्हार का कच्ची मिट्टी के बर्तनों को रूप देना व माता पिता का बच्चे को बचपन में अच्छे संस्कार देना ही उचित है न तो पके बर्तन में कोई बदलाव आ सकता है न बडे होने पर संस्कारों में बदलाव लाया जा सकता है ।

1291। हमारे कर्म ही यदि श्रेष्ठ हैं तो वही हमें मुक्ति दिला सकते हैं ।

1292।विश्व के सब ज्ञानों में आत्मज्ञान सर्वश्रेष्ठ है अन्य सभी क्षणिक व स्वार्थपूर्ण हैं आत्मज्ञान से मानव स्वंय को जानकर भगवद्‌भक्ति के अमृतमय रस को पान कर संसार से मुक्त हो जाता है।

1293। स्वार्थ एक ऐसी घृणित वस्तु है जो इस लोक व परलोक दोनों को नष्ट कर देती है समाज में उपयोग हो तो व्यक्ति समाज की दृष्टि में गिर जाता है धर्म में हो तो परलोक नष्ट हो जाता है ।

1294। जो जिस भाव से प्रभु को भजता है प्रभु भी उसे वैसे ही भजते हैं ।

1295। प्रभु के प्रति जब प्रेम पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है तब उसे संसार में जानने योग्य कुछ शेष नहीं रह जाता है तथा उसका मानव जीवन सार्थक हो जाता है ।

1296।स्वेच्छा से ग्रहण की हुई कोई भी धारणा हृदय के अनुकूल होने के कारण अच्छी व फलदायी होती है ।

1297। पुण्य व पाप कर्मो का व्यक्ति तब तक भागी नहीं होता जब तक उसके हृदय की गवाही न हो ।

1298। व्यभिचार रहित परम भक्ति , सत रज तम तीनों से परे , परब्रह्म में लीन करने वाली होती है ।

1299। पृथ्वी के ऊपर नीला आकाश एक भ्रम मात्र ही है वह तो केवल रिक्त स्थान है , प्रभु निर्मित संसार भी माया जाल ही है जिसे मानव सब कुछ समझता है पर केवल स्वप्नमात्र ही है।

1300। संसारी व भोगी अपनी रुचि के अनुसार आदर सम्मान देते हैं बुद्धिजीवी सुसंस्कृत व धार्मिक लोग संस्कारी लोगों को ही आदर देते हैं जो कल्याणकारी हो।

1301। क्षमाशील व्यक्ति ईश्वर से क्षमा पाने का नैसर्गिक अधिकारी होता है ।

1302। संपूर्ण ब्रह्मांड में सभी प्राणी सत रज तम तीनों गुणों से युक्त हैं जो भी इन तीनों से परे है वह सच्चिदानन्द है।

1303। सच्चे मन से जो भी प्रभु को मन में बिठायेगा , उसका हृदय मन्दिर बन जायेगा , प्रभु वहां वास करेंगे ।

1304। देश की सीमा पर सुरक्षारत कार्यकर्त्ता कष्टों को झेलते हैं अपना रक्त बहाकर प्राणों की आहुति देते हैं ऐसे देशभक्तों को उनके त्याग व बलिदान के लिये जनता कभी नहीं भुला सकती है ।

1305। जब हम तर्जनी उंगली से किसी की तरफ इशारा करते हैं बाकी तीनों उंगलियां हमारी तरफ ही होती हैं स्वंय को चेतावनी देती हैं अपने अन्दर के दोषों को दूर करने की , उसके बाद ही हमें किसी के दोष निकालने का अधिकार होगा।

1306। कभी भी हमें किसी को पाप कर्म करने को उकसाना नहीं चाहिये यह पाप है और अक्षम्य अपराध है ईश्वर उसे कभी क्षमा नहीं करेंगे ।

1307। किसी भी एक इन्द्रिय पर विजय पाने से दूसरी इन्द्रियां स्वंय ही वश में हो जाती हैं ।

1308। ज्ञान की गहराई का कोई भी अन्त नहीं है जितना हम इसकी गहराई में जायेंगे उतनी ही अधिक और गहराई पायेंगे , इसकी गहराई में ही संपूर्ण पृथ्वी व ब्रह्मांड का अस्तित्व छिपा हुआ है ।

1309। सुकर्मों के लिये किसी को प्रेरित करना पुण्य है इससे करने वाले का उद्धार निश्चित है , ईश्वर उनसे बहुत प्रेम करते हैं।

1310। अपने सब कामों को ईश्वर को समर्पित करने वाला व्यक्ति मन वाणी और कर्म से ईश्वर उपासक है ।

1311। छाया व्यक्ति का साथ नहीं छोडती उसी तरह आत्मा भी कभी ईश्वर का साथ किसी जन्म में भी नहीं छोडती क्योंकि आत्मा भी ईश्वर की ही छाया मात्र है ।

1312। व्यक्ति के सम्पूर्ण कर्म तथा गतिविधियां उसके अपने स्वभाव के अनुसार ही होती हैं वैसा ही उसका स्वरूप होता है।

1313। इन्द्रियों के वश में होते ही मानव शांतचित्त हो ईश्वर को पाने के लिये प्रयत्नशील रहता है और आत्मज्ञान होने पर उसे आत्मसाक्षात्कार हो जाता है ।

1314। जिसने आसक्तियों को त्याग दिया है हृदय में संतोष धारण कर लिया है उसकी अन्तरआत्मा सदैव संतुष्ट व प्रसन्न रहती है हृदय में सुख शांति रहती है ।

1315। धन प्राप्त करने की लालसा पापों की ओर अग्रसर करती है मानव को दानव बना देती है धन का संतोष सब पापों से मुक्त कराकर व्यक्ति को मानव बनाता है ।

1316। एक गूंगा मिठास का अनुभव किसी को बताने में असमर्थ होता है उसी प्रकार आत्मानुभव प्राप्त मानव उस परम आनन्द का अनुभव किसी से कह नहीं सकता ।

1317। ईश्वर समस्त प्राणियों व मनुष्यों में व्याप्त है ईश्वरीय ज्ञान भी सभी में है सभी कुछ ईश्वर प्रदत्त है ।

1318। ईश्वरीय ज्ञान के आवरण में ही सब काम सुचारु रूप से चल रहे हैं अन्यथा सम्पूर्ण विश्व में सब काम मृतप्राय व शून्य ही होते ।

1319। शारीरिक असमर्थता से दिनचर्या अव्यवस्थित होती है मानसिक असमर्थता से जीवन अव्यवस्थित होता है ।

1320। अन्याय न्याय को जन्म देता है और न्याय अन्याय को समाप्त करता है ।

1321। आजकल धार्मिक नैतिक आर्थिक सामाजिक राजनैतिक व वैज्ञानिक क्षेत्रों में जो विकास अपनी चरम सीमा पर है उसका श्रेय ज्ञान को ही जाता है ।

1322। विश्व में ज्ञान ही प्रधान है ज्ञान के विना सब निरर्थक है।

1323। सूअर को कितना भी साफ रखो उसे कीचड ही प्रिय लगता है ऐसे ही दुराचारी सदाचारियों के बीच खुश नहीं रहता।

1324। हृदय के अंधेरे में मणि रूपी छिपे हुये सद्‌गुणों को सत्संग द्वारा मायारूपी आवरण से मुक्त करो ताकि उनके प्रकाश में हृदय में विराजमान ईश्वर का दर्शन कर सकें तथा अपने इस नश्वर जीवन को मुक्त कर सकें ।

1325। एकाग्रता व ईश्वर स्मरण अन्तर आत्मा को शांति व पवित्रता प्रदान करते हैं उसी से ज्ञान ज्योति उत्पन्न होती है व निर्वाण प्राप्त होता है मुक्ति मिलती है ।

1326। सत्य न्याय को जन्म देकर उसका हमेशा पोषण करता है तथा झूठ अन्याय को जन्म देकर शोषण करता है ।

1327। आजकल "धन" एक ऐसी वस्तु है जो "पारस" समान मानी जाती है जो लोहे जैसी वस्तु को भी सोने की संज्ञा देता है धनवान कपटी होने पर भी धर्मात्मा कहलाता है दुराचारी होने पर भी सदाचारी कहलाता है ।

1328। आसक्ति रहित वैराग्य की भावनायें प्रभु के निकट ले जाती हैं साक्षात्कार कराती हैं मायावी संसार से कोसों दूर ले जाती हैं ।

1329। ईश्वर तो भाव देखते हैं निष्काम सेवा करने वाले की सहायता के लिये सदैव तत्पर रहते हैं उसे दंड नहीं मिलता।

1330। भारत जैसे सुसंस्कृत देश के लिये यह बडे दुर्भाग्य का विषय है सत्ता में आने वाले जन प्रतिनिधि चुनाव व किसी भी प्रकार के प्रचार के समय अभद्र पुरुषों की भांति हिंसा का उपयोग करते हैं एक दूसरे पर कीचड उछालते हैं आचार संहिता का उल्लंघन करते हैं जबकि जनता व न्यायपालिकाओं के सम्पर्क में आकर सम्मानपूर्वक वे अपने सुझाव व जनहित कार्यक्रमों को जनता के समक्ष रख सकते हैं ।

1331। कर्म की सार्थकता उसकी सफल कर्मठता में ही निहित है ।

1332। वासनायें ही आसक्तियों का आधार होती हैं और आसक्तियां पापों का मूल कारण होती हैं अत: वासनाओं का त्याग मानव की सुख शांति के लिये अति आवश्यक है तभी ईश्वर को पा सकता है ।

1333। पूर्व जन्मों के पुण्य कर्मो का ही फल होता है जब हमें जीवन का उद्धार करने को सत्संग का आश्रय मिलता है और परमात्मा के आशीर्वाद से जीवन का कल्याण होता है संसार से मुक्ति मिलती है ।

1334। इस मायावी संसार में जिसने आसक्ति पर विजय पा ली वह सब व्याधियों से छूट गया व परम शांति को पा गया है।

1335। दान देना व सम्मान पूर्वक निस्वार्थ भावना से देना ही फलदायक व पुण्य देने वाला है अन्यथा व्यर्थ है।

1336। विश्व में किसी को धोखा देना कुछ वर्षो की सजा हो सकती है पर यदि भगवान को धोखा दिया तो चौरासी योनियों में भटकना ही पडेगा इसे कभी नहीं भूलना चाहिये ।

1337। धन वैभव व भौतिक साधनों से सम्पन्न होने से व्यक्ति भले ही इस विश्व की दृष्टि में बडा हो जाये परन्तु ईश्वर की दृष्टि में वह व्यक्ति जो निस्वार्थ सेवा करता है परोपकारी है भले ही निर्धन है वही सबसे बडा धनी है ।

1338। महापुरुषों व ऋषिमुनियों को उनके चरित्र व आचार व्यव्हार व महान व्यक्तिगत भावनाओं से ही जाना जाता है।

1339।सद् इच्छा अच्छे कर्मो में परिणित होकर इहलोक व परलोक दोनों को सुधारती है बुरी भावना का फल बुरा ही होता है

1340। सत्संग व पुण्य कर्म अंत:करण को तथा बाहरी वातावरण को स्वच्छ करते हैं कुसंग व पाप कर्म दूषित करते हैं।

'संकलन' उषा अग्रवाल